सफेद मूसली

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

सफेद मूसली

1.वानसपतिक नाम : Chlorophytum borivilianum
कुल: Asparagaceae

2.सामान्य वर्णन : अतः यह खेती के लिए अनुपयुक्त मानी जाती है जबकि बोरिविलयिम प्रजाति ही खेती के लिए उत्तम मानी जाती है। सफेद मूसली शारीरिक शिथिलता को दूर करने हेतु उत्तम टॉनिक माना गया है क्योंकि यह पोष्टिक और बलवर्धक होती है। सफेद मूसली पहले उदयपुर, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा तथा सिरोही के जंगलों में प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में मिलती थी परन्तु अन्धाधुन्ध अवैज्ञानिक दोहन से ये प्राकृतिक भण्डार नष्ट हो गये है व खत्म होने के कगार पर है।कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन्स, सेपोनिन्स, स्टेरायड्स (0.003 प्रतिशत) इत्यादि रसायन इसमें पाये जाते है।

3. भौगोलिक वितरण: सफेद मूसली मुख्यतः राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्यों पाई जाती है। यह दक्षिणी राजस्थान में सफेद मूसली की क्लोरोफाईटम बोरीविलिएम व टयूबेरोजम प्रजातियाँ ही मुख्य रूप से पाई जाती है। इसमें ट्यूबेरोजम प्रजाति को हल्का माना जाता है तथा इसे अन्य मूसली में मिलावट करने हेतु काम लिया जाता हैं। राजस्थान से सटे राज्य मध्यप्रदेश में भी इसकी बोरिविलियम प्रजाति पाई जाती है। ट्यूबेराजम प्रजाति में कन्द का छिलका उतारना कठिन होता है।

4. कृषि तकनीक: मूलतः यह एक कन्द फसल है अतः प्रयुक्त की जाने वाली जमीन नर्म होनी चाहिये। अच्छी जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें जीवाश्म की पर्याप्त मात्रा हो इसके लिए सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। भूमि ज्यादा नर्म भी नहीं होनी चाहिए अन्यथा कन्द पतले

रहे जाते है। मूसली की फसल के लिए पानी की काफी आवश्यकता रहती है। वैसे तो जून माह में लगाये जाने के कारण प्रारम्भ में पानी की आवश्यकता काफी रहती है। परन्तु जुलाई अगस्त में वर्षा होने से कृत्रिम रूप से सिंचाई की जरूरत नहीं रहती। जब तक फसल पकाने पर भूमि से उखाड़ नहीं ली जावे तब तक जमीन गीली रहनी चाहिए। अतः बरसात के 90 दिन के बाद पानी देना जरूरी हो जाता है। स्प्रिंक्लर सिंचाई उत्तम है। इसकी खेती के लिए पाँच प्रकार की खाद प्रयोग में ली जा सकती। 1. गोबर / कम्पोस्ट खाद : प्रति एकड़ 5 से 10 ट्रोली खाद डालना उपयुक्त रहता है जो खेत को तैयार करते समय बिजाई से पूर्व अच्छी तरह मिला देना चाहिए। 2. रासायनिक खाद : निर्यात की दृष्टि से फसल उगाते समय इसका उपयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। 3. हरी खाद : फरवरी व जून के मध्य जब खेत खाली रहता है तो अल्पविधि वाली फसल जैसे सन्, बरू, धतूरा उगाकर मई, जून में खेत तैयार करते समय हल चला कर खेत में ही मिला देने से अच्छे परिणाम देखे गये है। हड्डी खाद : यह इस फसल के लिए काफी लाभकारी सिद्ध है। यह खाद माइक्रो न्यूट्रिएन्टस से युक्त होने के कारण फसल के लिए उपयोगी है। मध्यप्रदेश में इसके काफी उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हुए है। हड्डी की खाद निम्न पते से प्राप्त हो सकती है। अलहिलाल ग्रुप 366, प्लाउडन रोड महू, जिला – इन्दौर (मध्यप्रदेश) 5.सॉयल कनडीशनर : भूमि को नर्म करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। हिन्दुस्तान एण्टी–बायोटिक्स का ''माईसिमिल'' काफी प्रभावी पाया जाता है।सर्वप्रथम खेत में गहरा हल चलावे। पहले से कोई अल्पावधि फसल (हरी खाद हेतु) उगा रखी है तो काटकर खेत में डाल देते है फिर गोबर की पकी हुई

खाद 5–10 ट्रोली प्रति एकड़ भुरक कर खेत में मिला देते है और पुनः एक बार गहरी जुताई करते है। 3' चौड़े व 6'' से 1.5'' ऊँचे बेडस बनाये जाते हैं। साथ ही पानी के निकास हेतु नालियों की पर्याप्त व्यवस्था की जाती है। आने–जाने के लिए पर्याप्त जगह छोड़ा जाना आवश्यक होता है। चौडे बेड्स नहीं बनाये जा सके तो आलू की तरह के सिंगल बेड्स भी बनाये जा सकते है।बीज/प्लांटिग मेटेरियल : इसकी बिजाई इसके कंदो/फिंगर्स से की जाती है। कंद/फिंगर्स के साथ पौधे का डिस्क अथवा क्राउन का कोई ना कोई भाग अवश्य लगा होना चाहिये अन्यथा जर्मिनेशन नहीं होगा।प्रथम फसल के लिए ट्यूबर 5–10 ग्राम तक के वजन का होना जरूरी है। इसकी प्राप्ति हेतु निम्न प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। जंगल से इसके बीज / ट्यूबर का बाजार भाव काफी अधिक है। एक एकड़ में 4–6 क्वी. ट्यूबर लगता है जिसकी अनुमानित लागत 1. 5 लाख रूपये आती है। जो प्रत्येक किसान के बस की बात नहीं है। अतः किसान जंगल से मूसली एकत्र करवा अपने खेत में ही प्लांटिंग मेटेरियल तैयार कर अगले वर्षो में उसकी बिजाई करें। जंगल से उखाडी मूसली सस्ती दर पर (100 रूपये लगभग) प्राप्त हो जाती है। पहले साल इस प्रकार की मूसली से कोई फसल प्राप्त नहीं होती है लेकिन प्राप्त फिंगर्स को बुवाई कर इनकी मात्रा बढ़ाई जा सकती है और अगले वर्षो में रोपण हेतु प्लांटिंग मेटेरियल तैयार किया जा सकता है। बीजो को प्राप्त करना काफी कठिन व श्रम साध्य है। बीज बहुत छोटे (प्याज जैसे) होते है जो कि पोलीथीन की थैली पुष्पक्रम पर बीज पकते समय बांधकर प्राप्त किये जा सकते हैं परन्तु इनका जर्मिनेशन प्रायः कम (19 प्रतिशत) पाया गया है तथा इनसे पौधा तैयार होने में भी 2 व

अधिक वर्ष का समय लगता है अतः बीज से पौधा नहीं उगाना चाहिए। 5–10 ग्राम वजन के क्राउनयुक्त फिंगर्स की आवश्यकता रोपण हेतु होती है इन्हें खेत में 6'X6' की दूरी पर रोपण किया जाता है। इस प्रकार 80000 फिंगर्स की एक एकड़ में रोपण हेतु आवश्यकता पढ़ती है अथवा 4–6 क्वी. फिंगर्स की मात्रा की प्रति एकड़ आवश्यकता रहती है। फंगस आदि से बचाने के लिए बावस्टीन के घोल में लगाने से पूर्व 2 मिनट तक डुबाना अथवा एक घण्टा गोमूत्र में डुबाना ठीक रहता है। खेत की तैयारी के बाद जमीन से 1 से 1.5 फीट ऊँचे तथा 3 से 3.5 फीट चौड़े अथवा आलू की खेती जैसे बेड्स बना लें। फिर 6.6" पर भूमि में छेद करते हुए फिंगर्स उसमें सीधे रखकर छेद बन्द कर दिये जाते है। छेद करने से पूर्व जमीन गीली अवश्य होनी चाहिए, जो बारिश से हुई हो तो ठीक अन्यथा सिंचाई करनी उपयुक्त होगी। यदि फिंगर बहुत छोटी हो तो 2–2 का भी रोपण करना चाहिए। फिंगर्स जमीन में 1" से ज्यादा गहरी नहीं होनी चाहिए व सीधी लगनी चाहिए। इसमें एक व्यक्ति लकड़ी से 6–6 पर छेद करता हुआ आगे चलता है दूसरा पीछे–पीछे फिंगर्स लगाता हुआ चलता रहता है। 1 फिंगर्स से फसल पकने के बाद 5–10 गुणा ज्यादा फिंगर्स की प्राप्ति होती है।खेत तैयार करते समय भूमि ज्यादा पोली नहीं होनी चाहिए। भूमि ज्यादा पोली होने से फिंगर पतली रह जावेगी।

5. फसलोत्पादन तकनीक (Harvesting Technique): कन्द को उखाड़ना : बिजाई से 100 दिन पश्चात् पत्ते सूख जाते है व माना जाता है कि फसली तैयार हो गई है परन्तु इसके बाद भी 1–2 महीनों तक कन्द को जमीन में ही रहने देना चाहिए तथा हल्का–हल्का पानी का छिड़गाव भी करते रहना चाहिए।

जब कन्द पूरे पक जाते है तो इनका रंग गहरा भूरा हो जाता है। इन्हें हाथों से ही निकालना चाहिए ताकि क्राउन नष्ट न हो सके। प्लान्टिंग मेटेरियल व बेचने हेतु कन्दों को पृथक–पृथक कर लेना चाहिए।इनकी मिट्टी को धोने के लिए इन्हें पानी से अच्छी तरह धोना चाहिए।बेचने योग्य छाँटे गये फिंगर्स का छिलका चाकू से उतार लिया जाता है ताकि फिंगर्स अच्छी तरह सूख सके। जो मूसली छिलने और सूखने पर सफेद रहती है तथा किसी प्रकार के काले / भूरे धब्बे नहीं हो उसके अच्छी गुणवत्ता वाली मूसली माना जाता है। छिली हुई मूसली को धूप में 2–3 दिन तक रखने से नमी पूर्णतया सूख जाती है।सूखी मूसली साईज अनुसार पोलीथीन की थैलियों में पैकिंग की जाती है तथा नमी का प्रभाव न पड़े।

6. औषधीय उपयोग : यह जिन्सेंग जितना ही बलवर्द्धक माना गया है। माताओं का दूध बढ़ाने प्रसवोपरान्त शिथिलता व बीमारियों हेतु, मधुमेह निवारण हेतु अनेक आयुर्वेदिक एलोपैथिक व यूनानी औषधियाँ इससे बनाई जाती है। विदेशों में इसका केलॉग्स जैसे स्लेक्स बनाने पर अनुसंधान चल रहा है, जिससे इसे नाश्ते के रूप में प्रयुक्त किया जा सके।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर

फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975

Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com